दशहरा

भारतीय संस्कृति के अनुसार प्रति वर्ष दशहरा मनाया जाता है, जिसकी तैयारी एक माह पहले से ही शुरु होती है। यह यादगार पुरुषोत्तम श्री राम के रावण पर विजय पाने का प्रतीक है। उन्होंने रावण को मारने के लिए शक्ति दुर्गा की आराधना की और दुर्गा के आह्वान द्वारा ही उन्होंने अंत में विजय पाई।

शक्ति रुपा दुर्गा को आठ हाथ तथा शेर पर सवार हुए महिषासुर का वध करते दिखाया गया है। इनके साथ-साथ श्री लक्ष्मी,सरस्वती,गणेश तथा कार्तिकेय सभी अपने-अपने वाहनों पर उनके साथ रहते हैं।

दूसरी तरफ नवरात्रि का व्रत तथा पाठ भी किया जाता है और छोटी-छोटी कुंवारी कन्याओं की पूजा भी की जाती है। कहावत है कि सौ ब्राह्मणों से उत्तम एक कन्या।

फिर रावण,कुम्भकर्ण तथा मेघनाद के बडे भयंकर पुतले बनाए जाते हैं जिनमें अनेक प्रकार की आतिशबाजी फिट की जाती है जिसे जलाने से बहुत जोरों की आवाज होती है। इन पुतलों को हर साल ऊंचा बनाते हैं और मजे की बात है कि हर वर्ष जलाने के बाद भी रावण आज तक जला नहीं है बल्कि और ही भयंकर रुप लेता जा रहा है।

आध्यात्मिक दृष्टि से देखा जाए तो रावण हमारे अंदर छिपी हुई बुराइयों का प्रतीक है जो पूरे समाज में चहुं ओर व्याप्त हैं। ये बुराइयां सारे विश्व में हर नर एवं नारी में पांच-पांच विकारों-काम,क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार के रुप में भरी हुई हैं जो जलाने पर भी नहीं जल रहीं हैं। यही असुर हमें रुलाने का कार्य करते हैं। इन आसुरी वृतियों में एक को छोडते हैं तो दूसरी सिर उठा लेती है जैसे राम द्वारा रावण का एक सिर काटने पर दूसरा सिर निकल आता था।

आध्यात्मिक दृष्टि से अष्ट-भुजाधारिणी दुर्गा अष्ट शक्तियों का प्रतीक है। ये अष्ट शक्तियाँ-

(1)सामना करने की (2)समाने की (3) निर्णय करने की (4) परखने की (5) विस्तार से संकीर्ण करने की (6) सहन करने की (7) सहयोग करने की (8) समेटने की शक्ति। ये शक्तियां पांच विकारों रुपी रावण को जीतने के लिए अस्त्र-शस्त्र हैं। शेर पर सवारी अचल-अडोल एवं निर्भयता का प्रतीक है।

उसी तरह श्री लक्ष्मी का वाहन उल्लू भी व्यर्थ कुलक्षणों को त्यागकर श्रेष्ठ लक्षणों से भरपूर ज्ञान-धन से सबको भरपूर करने का प्रतीक है।

सरस्वती वाहन हंस भी विद्या रत्नों से भरने वाली सर्वमनोकामना पूर्ण करने वाली है। हंस के समान नीर-क्षीर विवेक युक्त अर्थात् गुण एवं अवगुणों का विभेद बताने वाला कोई प्राणी नहीं है। इसीलिए वह विद्या के भंडार का प्रतीक है।

गणेश सवारी चूहा भी तीक्ष्ण बुद्धि का प्रतीक है। चूहे की विशेषता वस्तु को काटकर इस प्रकार भाग निकलने की प्रवृति है जिससे उसे कोई पकड नहीं सकता। कार्तिकेय की सवारी मयूर भी पावन गृहस्थ-आश्रम का प्रतीक है क्योंकि सारे विश्व में एक मयूर ही ऐसा पक्षी है जो निर्वि है अर्थात् गृहस्थ की पावनता का प्रतीक है।

नवरात्रि में जो कन्याओं का आह्वान करते हैं वह भी पावनता का ही प्रतीक है क्योंकि कन्याएं कौमार्यव्रती होती हैं।

ऐसे आज के इस पावन त्योहार में सच्चा दशहरा आसुरी वृत्तियों पर विजय पाने का दृढ संकल्प का प्रतीक है। क्योंकि आज सारे विश्व में ही माया रुपी रावण का राज्य छाया है। जब तक नर-नारी द्वारा अपने अंदर छिपे हुए रावण को योगाग्नि से भस्म नहीं किया जाएगा तब तक आत्मा रुपी सीता को परमात्मा राम स्वीकार नहीं करेंगे। अत: सर्व धर्म के अनुयायियों को पतित पावन राम का आदेश है कि हे आत्मा रुपी सीता, अब माया रुपी रावण को जलाने के लिए कामाग्नि को तिलांजलि दें एवं योगाग्नि का आह्वान करें, अन्यथा रावण भी अपनी सेनाओं के साथ अब तीसरे विश्व-युद्ध की तैयारी लिए समीप आ रहा है।

ब्रह्माकुमारी रानी